का संकेत है। अगर देश को राज्यों की रचना करनी थी तो परमपूज्यनीय श्री गुरुजी ने उस समय कहा कि यह प्रशासनिक सुविधाओं के आधार पर करना चाहिए, न कि भाषाओं के आधार पर। पर हमने भाषाओं को इकाई माना। और भाषाओं को इकाई मानकर सब प्रकार के राज्यों की रचना की। और आज हम कहते हैं कि ये संघ राज्य हैं। फैडरेशन आफ स्टेट्स क्या है? कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और राजस्थान की सीमाओं से लेकर उत्तर पूर्व के पहाड़ियों तक फैला हुआ क्या सांस्कृतिक दृष्टि से देश एक नहीं है। परन्तु राजनैतिक दृष्टि से इसका विभाजन किया। उसके परिणाम आज हम भुगत रहे है।। आज भी भाषाओं के आधार पर दो राज्य आपस में संघर्ष करने के लिए खड़े होते हैं। आवश्यकता है किसी भी राज्य में रहने वाले आपस में सांस्कृतिक एकता को अपने जीवन के मूल्यों को, जीवन की शैली को समझकर छोटी-मोटी सुविधाएं मांग सकते है। लेकिन आपस में संघर्ष का कारण एक ही रहा कि राजनैतिक दृष्टि से हमने उसको अलग-अलग टुकड़ों में बांटा। तो इसलिए बहुत संघर्ष होते हैं। फिर यह हमारा राज्यों का अधिकार है। चाहे हमारा कुछ भी हो। उसके चलते कई प्रकार के क्षेत्रीय दल खड़े हुये। क्षेत्रीय दल कहते हैं कि दिल्ली में कुछ भी हो हमारी राज्य की मांग पूरी होनी चाहिए। क्षेत्रवाद क्यों बढ़ा? भाषाओं के आधार पर अस्मिताएं जागृत करते हुए दूसरी भाषाओं के बारे में अश्रेष्ठता का भाव क्यों बना? राजनैतिक दृष्टि से ही इन बातों की तरफ देखा गया। हम सबका बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण इतिहास कुछ वर्षों का है। परिणाम क्या हुआ। इस प्रकार के राज्यों को इस आधार पर विभाजित करना ये अपने देश की एकात्मता के सामने चुनौती बन गया है। फिर इसके आगे चलते हैं और भी संकुचित और भी छोटी-छोटी बातें उभर कर आने लगी। लोग मांग करने लगे कि हमको खालिस्तान चाहिए। अब एक मांग और उठ रही है कि हमको द्रविडस्तान चाहिए जो विभिन्न लोग है, वनवासी लोग हैं उनका अपना अलग राज्य चाहिए, अलग देश चाहिए। उत्तर पूर्व के क्षेत्र में ग्रेटर नागालैण्ड को लेकर मांग उठती है कि हमारा नागाओं का स्वतंत्र राज्य होना चाहिए। इस प्रकार की एक राजनैतिक सोच विकसित होती गई। अस्मिताएं बढ़ती गई और सारे देश की एकात्मता के सामने आज चुनौती के रूप में हम सबके सामने हैं। थोड़ा-थोड़ा अध्ययन करेंगे तो ध्यान में आता है कि इसके पीछे विदेशी शक्तियां विभेदकारी विचारों को जन्म देने के लिए काम करने वाली विदेशी शक्तियां